ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

"शाल्मली"
'इन्सानी रिश्तों को पहचानती स्त्री की चुनौतियाँ'
" Shalmali" 'Woman's Challenges Recognizing Human Relationships'

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

दीपा सहाय
सह–आचार्य,
हिन्दी विभाग,
सम्राट पृथ्वी राज्य चौहान
राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रगतिशील विचारों की सुप्रसिद्ध लेखिका - "नासिरा शर्मा" जी ने मनुष्यता को ही जीवन में सबसे बड़ा धर्म माना है। आपका 'शाल्मली' उपन्यास आधुनिक कामकाजी स्त्री के दोहरे संघर्ष की व्यथा कथा है। घर और बाहर के उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए शाल्मली का स्वयं का सुख कहीं खोता जा रहा है। उसका पति नरेश हीन भावनाओं से ग्रस्त हो पत्नी पर अपना पूर्ण आधिपत्य दिखाकर समाज में अपना प्रभुत्व जमाना चाहता है। पुरुषोंचित अहंकार नरेश में पत्नी के प्रति ईर्ष्या को जन्म दे देता है। अनेक मानसिक कष्टों और अंतर्द्वन्दों को झेलती शाल्मली पति से तलाक लेने को ही समस्या का समाधान नहीं समझती वरन उसके साथ रहकर संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करते हुए जीवन जीने में विश्वास रखती है।

Well known writer of progressive ideas. Nasira Sharma has considered humanity to be the biggest religion in life. Your Shalmali novel is a tale of the dual struggle of the modern working woman. Shalmali own happiness is being lost somewhere by performing the responsibilities of home and outside. Her husband Naresh, suffering from inferior feelings, wants to establish his dominance in the society by showing his complete suzerainty over the wife. Man's arrogance gives rise to envy in the king towards his wife. Having divorced from her husband, who is suffering from many mental sufferings and inner feelings, does not consider it as the solution to the problem, but believes in living a life by living with her and facing conflicting situations.

मुख्य शब्द : आत्मसंघर्ष, त्रिकोण, धैर्यता उन्मुक्त, प्रगाढ़ता, त्रिया चरित्र, वासनापूर्ति, सेमल।

Self-Realization, Triangle, Unrestrained Unrestraint, Deepness, Trinity, Sensuality, Semal.

प्रस्तावना

आज समाज में प्रत्येक रिश्ते में चाहे वह पति–पत्नी का हो, माँ–बाप का हो, पिता–पुत्र का हो या भाई–बहन का हो, सम्बन्धों की मिठास धीरे–धीरे कम होती जा रही है। भावना की अपेक्षा अर्थ का महत्त्व प्रधान हो गया है। "सम्बन्धों का आधार अब मानवीय भावना न होकर स्वार्थ अर्थात आर्थिक धरातल पर रह गया है। पति–पत्नी, माँ–बेटे, पिता–पुत्र सभी स्वार्थ की दृष्टि से एक दूसरे का मूल्यांकन करने लगे हैं जो अधिक फलदायी होता है उसके प्रति विशेष झुकाव रहता है। इस प्रकार सब सम्बन्धों की परम्परागत मर्यादा प्रायः समाप्त हो चुकी है। सम्बन्धों का आधार अधिकाधिक भौतिक होता जा रहा है। अतः आज के युग में सम्बन्धों में पहले जैसी स्वच्छता दिखायी नहीं देती"।[1]

आधुनिक स्त्री आज इन्सानी रिश्तों की वास्तविकता को पहचान कर अपनी भावुकता और संवेदनशीलता के स्थान पर अपनी विवेकशीलता से ऐसे सम्बन्धों को सहज बनाने के लिए निरन्तर प्रयासरत है। 'नासिरा शर्मा' का उपन्यास "शाल्मली" एक ऐसी ही सर्वगुण सम्पन्न स्त्री का आत्मसंघर्ष चित्रित करता है। "एक ऐसी औरत जो कमा भी रही है, और उसके पास अपना घर भी है, मर्द का सान्निध्य भी है फिर भी वह एक के बारे में ही क्यों सोचती है? इन सारे सवालों को लेकर 'शाल्मली' बनी है"।[2] एक साक्षात्कार में नासिरा जी ने स्वयं कहा है, "मैं इस 'शाल्मली' के जरिये इन्सानी रिश्तों की पड़ताल करना चाह रही थी, न कि त्रिकोण बनाकर उन मुद्दों से भागना क्योंकि यह अभी तक

होता रहा है कि दूसरी औरत या दूसरा मर्द लाकर मूल समस्या का आसान हल प्रस्तुत कर दिया जाता रहा है, जबकि गहराई में जाने से पता चलता है कि वही शिकवे–शिकायत और बुनियादी प्रश्न वहाँ भी अधूरे खड़े नज़र आते हैं, इसलिए मामला दो मर्द या तीन मर्द का नहीं है, बल्कि यह है कि शाल्मली या शाल्मली की तरह के चरित्र, चाहे वह मर्द ही क्यों न हो, सम्बन्ध को कैसे जीएँ"।[3]शाल्मली ऊँचे औहदे पर कार्यरत होते हुए भी एक सामान्य भारतीय स्त्री के यथार्थ को जीती है, "लेकिन वह 'दया या करुणा में डूबी अश्रु बहाने वाली उस नारी का प्रतीक भी नहीं है, जिसे पुरुष सत्ता की गुलामी में सब कुछ खो देना पड़ता है। वह सामान्य होते हुए भी असाधारण है और चुनौती के तेवर रखती है"।[4]

शाल्मली का विवाह नरेश के साथ होता है, परन्तु नरेश एक छोटी सोच वाला व्यक्ति है जो अपनी पत्नी को उसकी सम्पूर्णता में स्वीकार नहीं कर पाता। विवाह के कुछ समय पश्चात् ही शाल्मली को इस बात का आभास हो जाता है कि उनके बीच कुछ टूट रहा है। शाल्मली नरेश से हर दृष्टि से श्रेष्ठ है और यही नरेश की हीन भावना पति–पत्नी के मध्य दूरी का कारण बनती गई। शाल्मली जितना ही बात को सुलझाना चाहती है उतना ही वो बिगड़ती चली जाती है। "उसके विवाहित जीवन में गहन लगना था, सो लग गया। उसका संकल्प, संघर्ष, उसकी चुनौती जीवन के प्रति एक विशेष दृष्टिकोण, सब कुछ एकाएक ढहते नजर आए। जीवन का यह रूप उसने कभी सोचा नहीं था। अपनी सारी कोशिशों के बाद उसे लगने लगा था कि कहीं यह गहन पूरा का पूरा उसके विवाहित जीवन को निगल न जाए"?[5]

नाजों से पली शाल्मली अपने दाम्पत्य जीवन को बचाने का हर सम्भव प्रयास करती है। नरेश के द्वारा बात–बात पर अपमानित होने पर भी वह असीम धैर्यता धारण किये रहती है। नरेश द्वारा कहा गया यह वाक्य "तुम ठहरीं एक आधुनिक विचार की महिला..... विचारों में स्वतंत्र, व्यवहार में उन्मुक्त, तुम्हारे संस्कार....."।[6] शाल्मली को झकझोर कर रख देता है। पति के रूप में एक साथी, एक पुरुष, एक मित्र की जो कल्पना उसने की थी वह धराशायी होती प्रतीत होती है। एक पढ़ी–लिखी आधुनिक विचारों की महिला क्या अपने सम्बन्धों की प्रगाढ़ता नहीं चाहती? शाल्मली भी आज एक आधुनिक और कामकाजी स्त्री होते हुए भी अपने पति को हर सुख देने का प्रयास करती है। वो अपने एकान्त को जब अपने पति नरेश के साथ बाँटने का प्रयास करती है तो नरेश उसकी देह को टटोलता है और शाल्मली की इच्छा के विरूद्ध उसके साथ सम्भोग करता है। इतना अपमान सहकर उसके अन्दर की औरत बागी होती चली जाती है। एक आक्रोश उसको उत्तेजित करता है और यह पति–पत्नी का रिश्ता उसे एक बोझ जैसा प्रतीत होता है। वह इस अपमान से बिलख उठती है "इतना वहशीपन, इतना दुर्व्यवहार आखिर किस लिए? गुस्से से पागल–सी हो गई शाल्मली। आँखे निकाल कर जैसे उसे अन्धे कुएँ में किसी ने फेंक दिया हो। वह एक अजीब पीड़ा से छटपटा उठती थी। इस हद तक सम्बन्धों और भावनाओं को कोई अपमानित कर सकता है। इस सीमा तक कोई निर्दय हो सकता है। कहाँ आकर फँस गई है वह.....!" यही मेरा भाग्य है! हाँ, माँ यही कहती हैं कि यही तेरा भाग्य है। आह! यही मेरा भाग्य है! कारावास, यातना, अपमान, पीड़ा, छटपटाहट और एक बन्द गली का अन्धेरापन....."![7] शाल्मली आज अपने रिश्ते की वास्तविकता को पहचान चुकी थी। उसका पति अपने अहंकार के सम्मुख उसकी इच्छा, उसकी शालीनता की कोई कद्र नहीं करता था।

छोटे से परिवार में पली शाल्मली सम्बन्धों की मधुरता अच्छी प्रकर पहचानती थी। नरेश के भरे–पूरे परिवार और सगे सम्बन्धियों की भीड़–भाड़ में वह स्वयं को प्रसन्नचित अनुभव कर रही थी। शाल्मली ने नरेश के माँ बाबूजी से जब अपने साथ चलने का आग्रह किया तो नरेश अपनी स्त्री के प्रति धारणा को व्यक्त करते हुए कहता है –

"अभी तो खुश हो जब साथ रहना पड़ जाएगा, तो पता चलेगा, फिर होगी चखचख।

मुझसे नहीं होने की चख–चख। बड़े विश्वास से कहती शाल्मली।

त्रिया–चरित्र का क्या भरोसा? नरेश हँसा।

तुम कभी–कभी बड़ी अटपटी सी बात कह जाते हो? शाल्मली ने बुरा मानते हुए कहा"।[8]

औरत की भावनाएँ, उसके प्रेम, उसके अपनत्व को जब नरेश त्रिया चरित्र कह कर सम्बोधित करता तो पति की बौनी सोच पर शाल्मली का मन पीड़ा से कराह उठता। वह गम्भीरता से कह उठती है – "एक तो तुमसे विनम्र निवेदन है कि बार–बार औरत कहकर मुझ पर टीका–टिप्पणी मत किया करो। दूसरे, औरत की अक्ल पर शक करना छोड़ दो। एक स्तर के बाद हम औरत–मर्द नहीं रह जाते हैं, बल्कि हमारा काम हमारी पहचान होती है, हमारी अक्ल हमारी कसौटी होती है"।[9]

पत्नी का पति से ऊँचे औहोदे पर होना आदमी को सहन नहीं होता पर फिर भी वह यह सोचता है कि पढ़ी–लिखी बीवी है तो वह पैसा भी कमा कर लाये, उसके घर की देखभाल भी करे, उसकी इच्छाओं का भी सम्मान करे और उसके अत्याचारों को भी चुपचाप सहन करे। अपनी काम वासना की तृप्ति के लिए पत्नी की इच्छा भी उसके लिए कोई मायना नहीं रखती। शाल्मली के विरोध पर वह अपनी घृणित मानसिकता को व्यक्त करता है – "तुम जानना चाहोगी पुरुष की दृष्टि में औरत क्या है? भोगने की वस्तु.... वही उसकी पहचान है। इसलिए तुम औरत की तरह रहो, इसी में तुम्हारा उद्धार है और इस घर का कल्याण और गृहस्थी का सुख"।[10]

आज भी इस मानसिकता में कोई सन्तोषजनक परिवर्तन नहीं आया है, "इस सुख की चाह हमारे पुरुष प्रधान समाज में शाश्वत रही है। बौद्धिक स्त्रियों से समाज और परिवार भी बड़ी विरोधाभास अपेक्षाएँ रखता है। उससे उम्मीद की जाती है कि जहाँ वह घरेलू मोर्चे पर अस्तित्वहीन होकर सारा दायित्व निभाये वहीं बाहरी मोर्चे पर भी सफल हो और दोनों मोर्चे पर कामयाब रहने के बाद संघर्ष के कई नए और विचित्र मोर्चे खुल जाते हैं"।[11]

शाल्मली एक पढ़ी–लिखी जागरूक स्त्री है। उसकी शालीनता, नम्रता या समर्पण के बदले जब उसे अपने अस्तित्व की उपेक्षा का अनुभव होता है तो वह

इन्सानी रिश्तों के खोखलेपन, उसकी वास्तविकता को पहचान कर चुनौतीपूर्ण तेवर अपनाने से पीछे नहीं रहती। "शाल्मली को नरेश का स्वर सस्ता, बेदह सस्ता महसूस हुआ, किसी ने उसके सारे बदन में आग लगा दी हो। क्रोध का गर्म लावा उसकी शिराओं में उफनने लगा। किसी जंगली बिल्ली की तरह वह पलटी और अपने नाखूनों और दाँतों से नरेश को नोच डाला"।[12]

शाल्मली पति की वासनापूर्ति के लिए समर्पण को औरत की कमजोरी मानती है। इसलिए वह नरेश का विरोध करने की क्षमता भी रखती है, परन्तु स्वावलम्बी होते हुए भी वह परिवार को तोड़ना नहीं चाहती। वह एक मजबूत औरत के समान अपने निर्णय खुद लेने में सक्षम है। सरोज के समझाने पर भी वह नरेश को तलाक देने के लिए तैयार नहीं होती। वह अपने दाम्पत्य की दरार को सरोज के सम्मुख चतुरता से भरती हुई कहती है "मुझे लगता है, मैं पति के साथ नहीं, बल्कि अतिथि के साथ रह रही हूँ और अतिथि तो हमारे समाज में भगवान का दूसरा रूप होते हैं"।[13]

शाल्मली अपने रिश्ते की वास्तविकता को समझकर भी उसको तोड़ने में विश्वास नहीं रखती वरन् मजबूती के साथ संघर्षपूर्ण जीवन के मध्य उसका सामना करने के लिए तैयार रहती है। एक बुद्धिजीवी के रूप में शाल्मली की सच्चाई आज के समाज में स्त्री के सामने उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हुई है। नासिरा जी ने कहा है – "सेमल के दरख्त को संस्कृत में शाल्मली कहते हैं। मैंने इसी के आधार पर नायिका का नाम शाल्मली रखा। सेमल की लकड़ी सस्ती होती है। सेमल का दरख्त एक खूबसूरत दरख्त है। उसकी लकड़ी से माचिस की तीली, ढोलक और बहुत सारी अन्य वस्तुएँ बनती हैं। उसके फूल और उसके डंठल खाए और पकाए जाते हैं। लेकिन यही लकड़ी जब पानी में डूब जाती है तो बहुत मजबूत हो जाती है। यह बात मैंने औरत के सन्दर्भ में कही है। जब शाल्मली का घर डूब जाता है, तब उसमें वह डूबती नहीं अपने को सम्भालती है और यही वह आधुनिक औरत है, जो गुजरे कल, आज और आने वाले कल की चुनौती को कुबूल करके आगे बढ़ती है और अपने पैरों पर खड़ी होती है"।[14]

आज आवश्यकता समाज को अपनी मानसिकता में बदलाव लाने की है। पति–पत्नी का सम्बन्ध बराबरी का है उसमें आदर की भावना होना चाहिए अपमान नहीं। तभी यह रिश्ता अपनी सच्चाई को प्राप्त कर सकता है। शाल्मली उपन्यास स्त्री की इसी चुनौतीपूर्ण सच्चाई का एक उदाहरण है तथा पुरुष की सोच बदलने का एक सफल प्रयास।

उद्देश्य

इस शोध पत्र का मूल उद्देश्य स्त्री द्वारा समाज में अपने अस्तित्व की पहचान कराना है। जिन अधिकारों से उसे वंचित रखा गया है, विरोध और संघर्ष के माध्यम से आज स्त्री को उन्हें प्राप्त करना ही है। समाज का निर्माण जिस तरह स्त्री के बिना संभव नहीं है उसी तरह सामाजिक व्यवस्था और परिवर्तन में भी स्त्री की अहम भूमिका होनी चाहिए। आज आवश्यकता है कि प्रगति की दिशा में बढ़ती स्त्री अपनी शक्ति को पहचान कर स्वयं जगे और सारे संसार को जागृत करें।

निष्कर्ष

उक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि आज स्त्री स्वयं यह स्वीकार करने लगी है कि मैं मनुष्य हूं और एक मानवी के रूप में इस समाज में मुझे भी बराबरी से जीने का अधिकार मिलना चाहिए। स्त्री की चेतना के इस चिंतन में महिला लेखिका नासिरा जी की महत्वपूर्ण भूमिका है आपके उपन्यास शाल्मली की नायिका ऐसी ही एक बुद्धिजीवी स्त्री है। जो अपने घर और कार्यक्षेत्र में आने वाली समस्याओं का समाधान अपनी बुद्धिमता से ढूंढ लेती है। वह भारतीय स्त्री के समान संबंधों को तोड़ने में विश्वास न रखते हुए परिवार को जोड़ने का सार्थक प्रयास करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *मंजुला गुप्ता – हिन्दी उपन्यास समाज और व्यक्ति का द्वन्द्व, पृ. 36*
2. *नासिरा शर्मा – औरत के लिए औरत, पृ. 177*
3. *नासिरा शर्मा – औरत के लिए औरत, पृ. 177*
4. *नासिरा शर्मा – शाल्मली – फ्लैप से*
5. *नासिरा शर्मा – शाल्मली, पृ. 10*
6. *नासिरा शर्मा –शाल्मली, पृ. 11*
7. *नासिरा शर्मा – शाल्मली, पृ. 40*
8. *नासिरा शर्मा – शाल्मली, पृ. 49*
9. *नासिरा शर्मा – शाल्मली, पृ. 56*
10. *नासिरा शर्मा –शाल्मली, पृ. 128*
11. *डॉ. ज्योति किरण – हिन्दी उपन्यास और स्त्री जीवन, पृ. 59*
12. *नासिरा शर्मा – शाल्मली, पृ. 128–129*
13. *नासिरा शर्मा – शाल्मली, पृ. 167*
14. *नासिरा शर्मा – औरत के लिए औरत, पृ. 179*